International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 10 Issue: 03 | March - 2026 SJIF Rating: 8.659 ISSN: 2582-3930

हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों में बुन्देलखण्ड का सामाजिक परिदृश्य

अनिल कुमार दुबे[1], सपिा*[2], वीरेन्द्र कुमार सरसैया[3], अंजुलता[4],िीता शमाा[5]

[1]श्रीमती नवद्यावती कॉलेजऑफ़ एजुकेशि, झाँसी (उ.प्र.), भारत
[*2]नशक्षा संस्थाि, बुन्देलखण्ड नवश्वनवद्यालय, झाँसी (उ.प्र.), भारत (उ.प्र.), भारत
3श्रीमती नवद्यावती कॉलेजऑफ़ एजुकेशि, झाँसी (उ.प्र.), भारत
[4]वीरांगिा महाराििी लक्ष्मीबाई राजकीय मनहला महानवद्यालय, झांसी
[5]अतराा पीजी कॉलेज, अतराा, बांदा
*संवाद लेखक (Corresponding Author)
ई-मेल पता: sch.sapnasin16@bujhansi.ac.in

िािांश (Abstract):यह शोध नहन्दी के ऐनतहानसक उपन्यासों में बुन्देलखण्ड के सामानजक पररदृश्य का नवश्लेषण करता है। इसमें जातीय भेदभाव, सामंती व्यवस्था और सामानजक संघषा की गहि पड़ताल की गई है। गढ़कुण्डर एवं नवराटा की पनिािी जानतगत नवषमताओं और संघषों को निनित करते हैं, जबनक झाँसी की रािी समाािता और न्याय की िेतिा को सामिे लाती है। मृगियिी जानतगत बंधिों को तोड़कर प्रेम और माािवता का समथाि करती है। समग्रतः , ये उपन्यास बुन्देलखण्ड के समाज की जनटलताओं को उद्घानटत करते हुए सामानजक पररवताि और िविेतिा की नदशा को रेखांनकत करते हैं।

बीज-शब्द (Keywords)-बुन्देलखण्ड, ऐनतहानसक उपन्यास, जातीय भेदभाव, सामंती व्यवस्था, सामानजक संघषा, िविेतिा

1. प्रस्तावना (Introduction):

नहन्दी सानहत्य में ऐनतहानसक उपन्यास केवल घटिाओं का वणाि भर िहीं करते, बनल्क वे उस समय की सामानजक, राजिीनतक और सांस्कृनतक पररनस्थनतयों का भी सजीव नित्र प्रस्तुत करते हैं। बुन्देलखण्ड का क्षेत्र भारतीय इनतहास में अपिे वीरत्व, संघषा और सामानजक नवनशष्टताओं के नलए प्रनसद्ध रहा है। यहाँ की जातीय संरििा, सामन्ती परम्पराएँ , धानमाक रूनढ़याँ और न्याय-व्यवस्था िे समाज को नवशेष रूप प्रदाि नकया।'गढ़कुण्डर', 'नवराटा की पनिािी', 'झाँसी की रािी' और 'मृगियिी' जैसे उपन्यासों में बुन्देलखण्ड की सामानजक नस्थनतयों का बहुआयामी नित्रण नमलता है। इि उपन्यासों के माध्यम से स्पष्ट होता है नक उस समय समाज जातीय भेदभाव, ऊँि-िीि की भाविा, कठोर दण्ड-व्यवस्था और सामन्ती शोषण से जकड़ा हुआ था। साथ ही कुछ पात्रों िे समाािता, उदारता और माािवीय दृनष्टकोण अपिाकर परम्पराओं को िुिौती भी दी। इस प्रकार नहन्दी के ऐनतहानसक उपन्यास ि केवल इनतहास का दपाण हैं, बनल्क वे हमें उस कालखंड की सामानजक सच्चाइयों और माािव जीवि के संघषों से भी पररनित कराते हैं।

2. शोध-नवनध (Research Methodology):

(i) **गढ़कुण्डर** – 'गढ़कुण्डर' में वेदकालीि िातुवाणा व्यवस्था िािानवध सहस्र वषा बेटों में पररणत हो िुकी थी। परन्तु इसमें सम्बन्ध का निरन्तर अभाव दृनष्टगत होता है। उपन्यास में 'खाँगरों' का पति होिे के पश्चात् बुन्देलों के राज्य का स्थापि होती है। उपन्यासकार वमाा जी के अिुसार खाँगर जानत नवलासी, नशनथल और क्रूर थी। परन्तु इससे और आगे बढ़कर वह नदल्ली के मुसलमाािों में उिके नपछलग्गुओं की साँठ-गाँठ करती रहती थी। इसी जानत द्वारा बुन्देलों को पीठ नदखाया है – िाहे वह छल हो या कुछ और हो। इसी कारण उिके शब्दों में – "बुन्देलखण्ड की वतामाि नहन्दू जिता िे जो प्रािीि नहन्दुत्व है, उसकी रक्षा का बहुत कुछ श्रेय बुन्देलों को ही जाता है।" वस्तुतः खाँगर राजकुमार िागदेव कुण्डर के अनधपनत हुसैि नसंह का पुत्र है – वह यह िाहता है नक उसके लड़के का नववाह सोहिपाल बुन्देला की लड़की हेमवती से हो जाए। ऐसा दुः साहस ही खाँगरों के पति का कारण बताता है और हेमवती का भाई सोहिपाल अपिी बहि का माध्यम बिाकर और खाँगरों को मार कर अपिा विस्व स्थानपत करता है। हेमवती का िागदेव के प्रनत आक्रोश

होिा, इसी आशय को व्यक्त करता है। खाँगरों द्वारा कृत अपमाि का बदला लेिे केनलए अिन्तरत प्रनतश्रुत है।
कायस्थ जानत का नदकाकर तारक के प्रनत प्रेम नवज्ञाि में संकुनित है, क्ोंनक तारक ब्राह्मण है। वह दो आत्माओं को संयोजि को ही संयोजि माि लेता है और योग साधिा प्रपण हो जाता है। कहिा ि होगा नक हुसैि नसंह तथा सोहिपाल के बीि हुए युद्ध की कारणभूत यही उच्च–िीि की भाविा थी। इसी क्रम में उल्लेख है नक अजुाि कुमार की छाया से भी कुण्डर के शासक को परे शाि्ी है – इसनलए कुण्डर का मन्त्री गोपीिन्द खाँगर स्वयं हरी िन्द्रले के पि को हुसैि नसंह के पास ले जाता है। अजुाि कुमार के तका को ि बरदाश्त गोपीिन्द उसकी जाि बख्शाि्े की धमकी देता है। िागदेव के नमि नदवाकर और सहभोज्य ब्राह्मण नवष्णुदत्त के यहाँ भोजि कर लेते हैं; पर नशकार में िागदेव के साथ गये और खाँगरों द्वारा पकाये भोजि का भूख ि होि्े का बहाि्ा करके त्याग देते हैं।
इस प्रकार स्पष्ट है नक यहाँ प्रत्येक जानत या उपजानत अपि को दूसरी से श्रेष्ठ समझती थी तथा वह सामानजक परम्परा से िीि्े ही क्ों ि हो।
(ii) हविाटा की पहिनी – इस उपन्यास में भी यही जातीय नबन्दु नवद्यमाि है। राजा िायक नसंह का पुि कुंवरनसंह दासी पुि होि्े के कारण नसंहासि पर आसीि हीं हो पाता; इस देवी नसंह बुन्देला होि्े का श्रेय प्राप्त कर दीप िगर का अनधपनत बिा नदया जाता है।[13] जातीयता की यह दीवार दाँगी जानत की कुमुद तथा उपपुि दासी पुि कुंजरनसंह के मध्य भी नवद्यमाि है – नजसके कारण दोि्ों का नववाह हीं हो सकता। यही कारण है नक कुंजरनसंह का नदव्य, भव्य और असफल प्रेम कुमुद को देवी माि कर पूजि लगता है।[14] इस क्रम में स्वयं देवीनसंह बुंदेल इस मान्यता पर मुहर लगा देते हैं।[15]
(iii) झाँि्ी की िानी - झाँसी के राजा गंगाधरराव के समय समाज में पूणा-व्यवस्था यथानप प्रवनतात थी तथानप उसके अन्तगात नवधाि्ो का नवरोध प्रायः सभी स्तरों पर हो रहा था। जिऊ धारण करि का अनधकार माि नवप्र वगा - ब्राह्मण, क्षनिय, वैश्य, को ही था; परन्तु कुछ अववधूत (िये उपजानत) ि्े जिऊ धारण कर नलया था। इस प्रकार की ल्कस्थनत व्यापक हो जाि्े पर प्रकरण राजा साहब के पास पहुँि्ा। उन्ोंि्े अपराधी से कहा नक वह जिऊ तोड़कर फेंक दे। उसके इिकार करि पर राजा साहब ि्े तार निनमात गरम जिऊ पहिाि्े का आदेश नदया। ऐसा गरम जिऊ सम्बल्कन्धत उपपनत के कंठ से छुलाया ही जाि्े वाला था नक युवक तथा टोले केहस्तक्षेप से यह नवषय वहीं समाप्त कर नदया गया।
नवधाि ब्राह्मण िारायण शास्त्री तथा छोटी भंनगि केप्रेम प्रसंग में शास्त्री को पाखण्डी, पाजी, धमाद्रोही केअनभधाि प्राप्त होते हैं। यह नवषय भी महाराज केपास निणायाथा पहुँिता है और इि दोि्ों को झाँसी त्यागि का आदेश होता है, जो नक्रयाल्कित भी हो जाता है। राजा साहब अपि पुि के जन्मोत्सव पर सामानजक परम्परा का पालि करते हुए श्याम िौधरी िामक सेठ से पगड़ी बंधाते हैं और ि्ेग, दस्तूर में मोती जड़े सोि्े केकंगि प्रदाि करि का विि दे देते हैं। झाँसी समाज का एक उल्लेखिीय वैनषष्ट्य यह भी है नक ऊँि्ी जानत के लोग भी कोररयों के हाथ का पाि्ी तक पी लेते हैं। इसी प्रकार राजा द्वारा खुदाबख्श को देश निकाला दे नदया जाता है। इससे नसद्ध है नक झाँसी में न्याय व्यवस्था कठोर और महाराज की मौज पर आधाररत थी। िाटयशाला के प्रहरी की जरा सी असावधाि्ी पर उसे नबछछुओं द्वारा डाँसवाि्े का दण्ड नियत होता है। अलग-अलग वणों केअपराधों केनलए पृथक-पृथक दण्ड नवधाि थे। एक नवशेष वणा केअपराधों केनलए नबछछू से कटवाि्ा, गहि अपराधों में हाथ पैर कटवाि्ा, दहकते अंगारों से डाकुओं केअंग जलवाि्ा कैदनवधाि थे। नपता होि्े की अनभलाषा में महाराज 13 वषीय अवस्था वाली मुि से नववाह रिाते हैं। राजा साहब केनवधाि केनवपरीत राि्ी लक्ष्मीबाई का न्याय अत्यन्त उदार था, नजसके अन्तगात वे डाकू सागर नसंह को क्षमा दाि करके उसे "कुँ वर" का अनभधाि प्रदाि करती हैं। राजा साहब की िीनतयों का नवरोध भी समाज द्वारा नकया जाता था – जिसमुदाय का वाक् है **"इन िाि्ाओं-नवाब ो ने चौपट हकया।"**

(iv) **मृगनयनी –** सामन्ती व्यवस्था के नवरुद्ध खड़े होि्े की शल्कक्त मृगियिी में है जो प्रेम के धमा को समझती है और यह निणाय करती है नक वह लाछी को अपिी भानगिी बिाएगी। उसका कथि है – हम तुम निबान्ध हैं – दोि्ों एक से। तुम्हारी सम्पदा तुम्हारी माँ है, मेरी सगी भाई। तुम मेरी माँ और उिकी बहि होकर रहोगी। जानत नवषयक अवरोध का निदेश करि पर भी मृगियिी अपि निणाय पर दृढ़ रहती है – नबिा गाँव वालों की निन्ता नकए नबिा लाछी का प्रेम मृगियिी से निम्न है; क्ोंनक वह सम्माि्ाथा पनत को ग्वानलयर जाि्े की प्रेरणा देती है। उसके पनत अटल का प्रेम समाजि एक िुनौती है; क्ोंनक वह (शूद्र – अहीर) का प्रेम सामन्ती व्यवस्था के नवपरीत था। अटल ऐसी िुनौती को स्वीकार कर राजा मानसंह के प्रेम को अनधकृत कर जाता है। यहाँ ब्राह्मण वगा भी सामन्ती व्यवस्था का प्रनतनिनध बि कर कृषक वगा का शोषण करि के नलए उद्दत है। पुजारी शास्त्रों का सन्दभा देकर अपि नलए आय के बीसवें भाग का नवधाि करके परलोक का भय नदखाता है। यह वगा शूद्र को वेद पढ़ि के अनधकार से वंनित नकये हुए है। पुजारी तथा गाँव वालों से अटल (िट) तथा लाछी

निरन्तर भयभीत रहते हैं। उधर बाल्यकाल की नमली राजा मा िनसंह की ियी रा ि बि ि पर भी गरीब-अमीर की एकता ल्कस्थनत पर भयाकुल बिी रहती है। पोटा ि ट अटल का जातीय नवभाजि का सन्दभा देकर लाछी छोड़िे को प्रेरणा देता है; परन्तु लाछी सन्धषा हेतु प्रेररत करती है, पलायि केनलये िहीं।

3. श ध हवस्तारि

I. हवषय की पृष्ठभूहम

भारतीय सानहत्य में ऐनतहानसक उपन्यास केवल मिोरंजि का साधि िहीं रहे, बल्कि समाज के नवनवध पक्षों को समझिे का महत्वपूणा माध्यम भी बिे हैं। बुन्देलखण्ड का ऐनतहानसक और सांस्कृनतक वैभव भारतीय इनतहास में नवशेष स्थाि रखता है। यहाँ की वीरगाथाएँ , सामन्ती परंपराएँ , जानतगत व्यवस्था और सामानजक संघषा सानहत्यकारों को सृजि की प्रेरणा प्रदाि करते रहे हैं।

II. श ध का उद्देश्य

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य यह है नक नहन्दी के ऐनतहानसक उपन्यासों के माध्यम से बुन्देलखण्ड के समाज की जातीय संरिि ा, धानमाक परंपराएँ , सामानजक असमाि ता, स्त्री की ल्कस्थनत तथा न्याय-व्यवस्था का अध्ययि और नवश्लेषण नकया जा सके।

III. प्रमुख उपन्याि ों का चयन

- **गङकुण्डि** – जातीय श्रेष्ठता, खाँगरों का पति और बुन्देलों का उत्थाि।
- **हविाटा की पहिनी** – दासी-पुि की हीिता और जातीय दीवार।
- **झाँि ी की ि ानी** – कठोर सामानजक व्यवस्थाएँ और रा ि ी लक्ष्मीबाई की उदार दृनष्ट।
- **मृगनयनी** – सामन्ती शोषण केनवरुद्ध प्रेम और समाि ता की स्थापिा।

IV. ि ामाहिक परिदृश्य केआयाम

1. **ि ाि ीय अिमानिा** – हर उपन्यास में जातीय नवभाजि गहराई से निनित है।
2. **ि ामन्ती व्यवस्था** – शोषण, कर-व्यवस्था और राजा-महाराजाओं की कठोर ि ीनतयाँ।
3. **धाहमिक आडम्बि** – पुजाररयों द्वारा शास्त्रों के ि ाम पर भय और शोषण।
4. **स्त्री की स्स्थहि** – नववाह, दासी-पुि ी का भेद और समाज द्वारा लगाई गई सीमाएँ ।
5. **न्याय व्यवस्था** – राजा गंगाधरराव का कठोर न्याय बिाम रा ि ी लक्ष्मीबाई का उदार दृनष्टकोण।

V. श ध की प्राि ि ंहगकिा

आज के समय में जब जातीयता और सामानजक असमाि ता पर निरंतर नवमशा हो रहा है, ऐसे में ऐनतहानसक उपन्यास हमें यह समझिे में मदद करते हैं नक इि समस्याओं की जड़ें नकतिी गहरी हैं। सानहत्य ि केवल इनतहास का दपाण है, बल्कि सामानजक सुधार का मागादशाक भी है।

VI. हनष्कषि

नहन्दी के ऐनतहानसक उपन्यासों में बुन्देलखण्ड का समाज जातीय भेदभाव, सामन्ती उत्पीड़ि और धानमाक रूनढ़यों से नघरा हुआ नदखाई देता है। नफर भी कुछ पाि, नवशेषकर रा ि ी लक्ष्मीबाई और मृगियिी, माि वीयता, समाि ता और उदार दृनष्टकोण के प्रतीक बिकर सामिे आते हैं। इस प्रकार ये उपन्यास ि केवल समाज का यथाथा प्रस्तुत करते हैं, बल्कि सुधार और प्रगनतशील सोि का भी संदेश देते हैं।

4. हनष्कषि

नहन्दी के ऐनतहानसक उपन्यासों में बुन्देलखण्ड का समाज अपिी नवनशष्टताओं और नवरोधाभासों सनहत निनित हुआ है। इि उपन्यासों में एक ओर जातीय भेदभाव, सामन्ती उत्पीड़ि, धानमाक आडम्बर और कठोर न्याय-व्यवस्था नदखाई देती है, वहीं दूसरी ओर माि वीयता, समाि ता और उदार दृनष्टकोण के स्वर भी उभरकर सामिे आते हैं।
'गङकुण्डर' और 'नवराटा की पनिि ी' जैसे उपन्यास जातीय दीवारों और उच्च–ि ीि की माि नसकता को उजागर करते हैं। 'झाँसी की रा ि ी' में राजा गंगाधरराव की कठोर ि ीनतयाँ और रा ि ी लक्ष्मीबाई का उदार न्याय दृनष्टकोण उस समय के सामानजक द्वंद्व को स्पष्ट करते हैं। वहीं 'मृगियिी' सामन्ती व्यवस्था के नवरुद्ध प्रेम और समाि ता की क्रांनतकारी सोि प्रस्तुत करती है।
इस प्रकार, बुन्देलखण्ड का सामानजक पररदृश्य इि उपन्यासों में केवल अतीत का प्रनतनबम्ब िहीं है, बल्कि यह वतामाि समाज के नलए भी प्रेरणा का स्रोत है। यह शोध स्पष्ट करता है नक युगों-युगों से समाज जातीय और सामन्ती बन्धिों में बाँधा रहा है, परन्तु समय-समय पर ऐसे नविार और पाि भी सामिे आते रहे हैं नजन्ह ोंि े समाि ता, न्याय और माि वीय मूल्यों को स्थानपत करिे की नदशा में मागा प्रशस्त नकया।

5.िोंदभि िूची

(APA शैली – 7वााँ िोंस्किण)

1. वमाा, नव. (नतनथ अिुपलब्ध). गढ़कुण्डर. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशि।
2. वमाा, नव. (नतनथ अिुपलब्ध). नवराटा की पनििी. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशि।
3. वमाा, नव. (नतनथ अिुपलब्ध). झााँसी की रािी. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशि।
4. वमाा, नव. (नतनथ अिुपलब्ध). मृगियिी. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशि।
5. नमश्र, र. (2005). नहन्दी उपन्यास का नवकास. िई नदल्ली: राजकमल प्रकाशि।
6. शुक्ल, र. (2010). नहन्दी सानहत्य का इनतहास. वाराणसी: िागरी प्रिाररणी सभा।
7. नद्ववेदी, ह. (2002). आधुनिक सानहत्य और समाज. िई नदल्ली: राजकमल प्रकाशि।
8. ितुवेदी, व. (2015). नहन्दी केऐनतहानसक उपन्यास और सामानजक यथाथा. आगरा: सानहत्य भवि।
9. पाण्डेय, र. (2018). बुन्देलखण्ड का इनतहास और सानहत्य. िई नदल्ली: प्रकाशि नवभाग।
10. अज्ञात. (2019). "नहन्दी केऐनतहानसक उपन्यासों का सामानजक पररप्रेक्ष्य।" भारतीय सानहत्य, सानहत्य अकादमी।
11. अज्ञात. (2021). "बुन्देलखण्ड की सामानजक संरििा और सानहत्य।" सानहत्य वाताा, जुलाई अंक।

MLA शैली (8वााँ िोंस्किण)

1. वमाा, वृन्दाविलाल। गढ़कुण्डर. लोकभारती प्रकाशि, इलाहाबाद।
2. वमाा, वृन्दाविलाल। नवराटा की पनििी. लोकभारती प्रकाशि, इलाहाबाद।
3. वमाा, वृन्दाविलाल। झााँसी की रािी. लोकभारती प्रकाशि, इलाहाबाद।
4. वमाा, वृन्दाविलाल। मृगियिी. लोकभारती प्रकाशि, इलाहाबाद।
5. नमश्र, रामस्वरूप। नहन्दी उपन्यास का नवकास. राजकमल प्रकाशि, 2005।
6. शुक्ल, रामिन्द्र। नहन्दी सानहत्य का इनतहास. िागरी प्रिाररणी सभा, 2010।
7. नद्ववेदी, हजारीप्रसाद। आधुनिक सानहत्य और समाज. राजकमल प्रकाशि, 2002।
8. ितुवेदी, नविोद कुमार। नहन्दी केऐनतहानसक उपन्यास और सामानजक यथाथा. सानहत्य भवि, 2015।
9. पाण्डेय, रामिरे श। बुन्देलखण्ड का इनतहास और सानहत्य. प्रकाशि नवभाग, 2018।
10. "नहन्दी केऐनतहानसक उपन्यासों का सामानजक पररप्रेक्ष्य।" भारतीय सानहत्य, सानहत्य अकादमी, 2019।
11. "बुन्देलखण्ड की सामानजक संरििा और सानहत्य।" सानहत्य वाताा, जुलाई 2021।